धार्मिक अध्यापक

४११. श्री भक्त दर्शन : क्या प्रतिरक्षा मंत्री २९ नवम्बर, १९५६ के तारांकित प्रश्न संख्या ५९३ के उत्तर के सम्बन्ध में यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि पादरियों तथा अन्य धार्मिक अध्यापकों के वेतन समान कर दिये जाने के बाद यह मांग की गई है कि सभी वर्गों के धार्मिक अध्यापकों के वेतन-क्रम ऊंचे कर दिये जायें; और

(ख) यदि हां, तो इस माग के सम्बन्ध में क्या निर्णय किया गया है?

प्रतिरक्षा उपमंत्री (सरदार मजीठिया) : (क) तथा (ख). ऐसी कोई मांग नहीं की गई परन्तु कई जगहों से प्रस्ताव किया गया है कि धार्मिक अध्यापकों के वेतन की दरों समेत उनकी सेवा की शर्तों और नियमों का संशोधन किया जाना चाहिये। नियुक्त किए गए नये पे कमीशन की सिफारिशों के प्राप्त होने पर इस मामले का निरीक्षण करने का विचार किया गया है।

भौमिकी तथा खनन निदेशालय, उत्तर प्रदेश

४१२. श्री भक्त दर्शन : क्या इस्पात, खान और ईंधन मंत्री ३१ अगस्त १९५६ के तारांकित प्रश्न संख्या १६१३ के उत्तर के सम्बन्ध में यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) उत्तर प्रदेश में भौमिकी तथा खनन निदेशालय ने मई, १९५६ से अब तक जो कार्य किया क्या उसकी रिपोर्ट भारत सरकार को प्राप्त हो गई है;

(ख) यदि हा, तो क्या उस रिपोर्ट का सारांश सभा पटल पर रखा जायेगा;

(ग) इस कार्य में भारत सरकार के भूतत्वीय सर्वेक्षण विभाग द्वारा क्या सहयोग दिया गया; और

(घ) भारत सरकार ने इस कार्य में उत्तर प्रदेश सरकार को क्या सहायता दी?

खान और तेल मंत्री (श्री के० दे० मालवीय) : (क) और (ख). मई १९५६ से मई १९५७ तक "भौवृत्तिको तथा खनि निदेशालय" उत्तर प्रदेश ने जो कार्य किये उनकी रिपोर्ट भारत सरकार को मिल गई है। प्राप्त रिपोर्ट का सारांश इस प्रकार है :—

अवधि	स्थान	खोज की किस्म	विशेष कथन
१	२	३	४
अप्रैल से जून १९५६	सम्गीयानी, सतबंगा, रामगढ़, हजारीवां में नाथूखान कलाडुंगी, कोटाबाग, बनपुर, पोखारी, मोहनखाल और कंवारो, गढ़वाल और देहरादून	कच्चा लोहा, तांबा और भदह पदार्थों (asbestos) की खोज	मिडलैंड एस्टेट के समीप फास्फेट चट्टानों की मानचित्रकारी। कच्चे लोहे के नमूने विश्लेषण के लिये इकट्ठे किये गये।

१	२	३	४
जुलाई से अगस्त १९५६	गरब्यांग गांव, अल्मोड़ा पट्टीस चन्दपुर, बिचला नागपुर और तल्ला-कालीफाट, गढ़वाल और मसूरी	गरब्यांग गांव की समाप्ति के कारण, चूनापत्थर और खड़िया मिट्टी से सम्बन्धित जानकारियां इकट्ठी करना ।	उद्योग में उपयोग करने के लिये खड़िया मिट्टी के भभंडारों पर विस्तृत रिपोट की पूर्ति । गरब्यांग गांव के पुनः आवास के लिये नये स्थान का निरीक्षण किया गया । यह सिफारिश की गई कि गरब्यांग के गांव वालों को स्थायी रूप से स्थान बदल लेना चाहिये ।
सितम्बर १९५६	--	--	क्षेत्र में कोई काम नहीं किया गया । विभाग क्षेत्र की रिपोर्ट तैयार करने में व्यस्त रहा ।
अक्टूबर १९५६[1]	देहरादून	क्षेत्र में काम	नैनीताल जिले में कालाढुंगी और दचौरी के कच्चे लोहे के भू-भंडारों संबंधी रिपोर्टों की पूर्ति । अल्मोड़ा जिले में बिरौली और डुंगीधर के तांबा भभंडार ।
नवम्बर १९५६	पुरी में कर्वाणी गांव के समीप बारकोट और ऋषिकेश, नौलागढ़, मलगाव और बिरथाल, अल्मोड़ा	मिडलैंड एस्टेट के समीप, चूनापत्थर और फास्फेट चट्टानों की खोज, लोहा और मिट्टी	केलासीय (crystalline) चूनापत्थर के नमूनों का एकत्रण । चपान के समीप खोबरा,

१	२	३	४
			गुधी तहसील में कर्बाणी और गांव बन्सी के समीप कुछ स्थानों पर मिट्टी के भूभंडार खोजे गये। विस्तृत विश्लेषण के लिये नमूनों का एकत्रण और मानचित्रकारी।
दिसम्बर १९५६.	बारकोट और गोरापट्टी की पहाड़ियां, देहरादून, नीलकान्त, टोली और भागसी, गढ़वाल, बन्सी, मिर्जापुर, जूखागी, अल्मोड़ा।	चूनापत्थर, सेलखड़ी, मिट्टी और मैग्नेजाइट भूभंडारों की खोज	विश्लेषण के लिये नमूनों का एकत्रण और मानचित्रकारी।
जनवरी, १९५७ .	महीपुर और सेरा तेहरी गढ़वाल, नीलकान्त गढ़वाल बन्सी, मिर्जापुर।	चूनापत्थर और मिट्टी के भूभंडारों और खड़िया मिट्टी की खोज।	विश्लेषण के लिये चूनापत्थर और नमूनों का एकत्रण और मानचित्रकारी। यह अनुमान लगाया गया है कि २८·२ मिलियन टन चनापत्थर बारकोट तथा २८·४ नीलकान्त से प्राप्त है। बन्सी क्षेत्र में लगभग ७ मिलियन टन सफेद और पीली मिट्टी की संचित मात्रा है।
फरवरी, १९५७ .	गोरा पट्टी, देहरादून, बन्सी और मिला, मिर्जापुर सेरा रंगारा गांव और छपलगी टिहरी गढ़वाल निंधा।	चूनापत्थर, खड़िया मिट्टी और मिट्टी, संगमरमर की खोज।	नमूनों का एकत्रण और मानचित्रकारी।

१	२	३	४
मार्च १९५७ .	गोरापट्टी, देहरादून, टोल्ली और भाडसी गाव, गढ़वाल, कोटा मिर्जापुर, पिथोरा-गढ़, अल्मोड़ा ।	चूनापत्थर, अदहपदार्थ, गंधक, सीसा, खड़िया मिट्टी और सेलखड़ी की खोज ।	चूनापत्थर भूभंडारों पर किये जाने वाले कार्य को जारी रखना और नमूनों का एकत्रण ।
अप्रैल १९५७ .	नीलकान्त, बारकोट, देहरादून, कोटा मिर्जापुर, पिथोरा-गढ़, अल्मोड़ा । कांगड़ा और सरसाल गांव , सूताल के समीप तारा चाक में नन्द प्रयाग, पीपल-कुटी, गढवाल के समीप दयून और जमिन गांव ।	चूनापत्थर, सेलखड़ी मैग्नेजाइट, गंधकअदह और पारे की खोज	चूनापत्थर, सेलखड़ी और मैग्नेजाइट पर कार्य जारी रखना । विश्लेषण के लिये नमनों का एकत्रण । पारे के भूभंडार वर्षा या झरने के पानी द्वारा एकत्रित किये हुए लाइमुनीटिक कोटिंग (limunitic coatings) हैं । नीलकान्त नामक स्थान से प्राप्त चूना-पत्थर के नमूनों में सिलिका (silica) की उच्च मात्रा देखी गई ।
मई, १९५७ .	हाथीपांव, बारकोर, देहरादून, कोटा, मिर्जापुर गोरन्देश, अल्मोड़ा के चारों तरफ की पहाड़ियों में, केदारनाथ, बद्री-नाथ नन्दाकिनी, गढ़-वाल ।	चूनापत्थर, सेलखड़ी, मैग्नेजाइट, गंधक और अदह पदार्थ का अन्वेषण ।	विस्तृत विश्लेषण के लिये नमूनों का एकत्रण और मान-चित्रकारी ।

(ग) तथा (घ). उत्तर प्रदेश निदेशालय पहले किये हुए कार्य, और भारतीय भूगर्भीय सर्वेक्षण विभाग द्वारा की हुई सिफारिशों के आधार पर अपना भूगर्भीय कार्य जारी रख रहा है। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा प्रशिक्षित भौमिकी शास्त्रज्ञ (geologist) के विषय में मदद के लिये की हुई विशेष प्रार्थनाओं पर भारत सरकार अपने कायदों के अनुसार सहानुभूति पूर्वक विचार करती है ।